International Journal of Social Science & Management Studies (I.J.S.S.M.S.)
Peer Reviewed–Refereed Research Journal, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex - UGC S.N. 5351
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 8, No. – 3, April – 2022, Special Issues
2022

मानवता के सच्चे संरक्षक : गुरु नानक देव

डॉ. मलकीयत सिंह
सह–प्रोफेसर, हिंदी विभाग, राजकीय महाविद्यालय धर्मशाला

''सतगुरू नानक परगटेया, मिटी धुंध, जग चानण होवा।
ज्यों कर सूरज निकलया, तारे छिपे अंधेर पलोवा।।

भाई गुरुदास द्वारा उच्चरित यह शब्द धरती के उस महान आत्मा के अवतरण की ऐतिहासिक घटना को ब्यान करते हैं, जब मानवता की रक्षा हेतु ईश्वर ने गुरु नानक देव जी के रूप में स्वयं प्रकाशित होकर जगत में फैले मिथ्या आडंबरों और मानवता पर मंडरा रहे कोहरे को समाप्त किया।

सिख धर्म के प्रथम गुरु एवं संस्थापक गुरु नानक देव जी का जन्म मानव जाति की रक्षा एवं उसे संगठित करके, उसके भीतर अलौकिक मानवतावादी भाव जगाने वाला सिद्ध हुआ। इस कथन की पुष्टि हेतु हजारों तथ्यों के साथ–साथ सिख गुरु परंपरा, उनके बलिदान सिख धर्म की प्रतिबद्धता सेवाभाव आदि अनंत साक्ष्य उपलब्ध हैं। ऐसे में गुरु जी के जीवन पर लिखना सूर्य के सामने जुगनू के प्रकाश के समान है।

प्राकृतिक न्याय एवं ईश्वरीय संकल्पना की दृष्टि से लघु विहंगम दृष्टि डाली जाए तो करोड़ों आकाशगंगाओं में स्थित अन्य मंडलों के बीच हमारे ग्रह पृथ्वी पर मानव जीवन की उत्पत्ति सहज विकास की प्रतिक्रिया का हिस्सा नहीं लगती। अपितु विशाल सत्ता की संकल्पना प्रतीत होती है।

धरती पर मनुष्य के आने से पहले अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण की प्रक्रिया में खूंखार प्राणियों का एक झटके में समाप्त हो जाना अनायास नहीं हो सकता। धरती पर मानव जीवन के विकास क्रम में मानव इसलिए भी भिन्न है क्योंकि उसके पास बुद्धि कल्पना एवं भाषा का गुण अन्य प्राणियों से अधिक मात्रा में उपलब्ध है। इसी कारण वह जन्मजात ही विस्तारवादी बना रहा और जब जब उसकी अतिक्रमण कारी नीति मानव जाति के लिए खतरा बन गई तब तक किसी न किसी रूप में ईश्वर ने जन्म लेकर मानव को आगाह किया। ईश्वर के अवतरण की सभी प्रचलित अवतार एवं उनकी कथाओं को विश्व की सभी मानव जातियां कमोबेश रूप में स्वीकार करती हैं।

15 अप्रैल 1469 वैशाख सुदी राय भोए की तलवंडी श्री ननकाना साहब (वर्तमान पाकिस्तान) में श्री कालू जी मेहता एवं श्रीमती तृप्ता देवी जी के घर भी ईश्वरीय अवतार नानक ने जन्म लिया।

गुरु नानक जी के जन्म काल की परिस्थितियों को ध्यान से देखें तो मानव मानव का ही निशाना करने में तुला था ऐसे में गुरु नानक ने अपने मन वाणी कर्म से मानवता की रक्षा का उदाहरण प्रस्तुत किया तथा मानव के भीतर दया, धर्म, कर्म, भक्ति भाव जागृत करवाकर भयानक मारकाट के युग में मनुष्य में परपीड़ा परसेवा एवं परम सत्ता के प्रति प्रेम उत्पन्न किया।

राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियां :– गुरु नानक देव जी का जन्म ऐसे समय हुआ जब आसम से उठी इस्लाम की आंधी ने उत्तर भारत को अपने घने धुंध के में घेर रखा था भारत के निवासी इस्लाम के संक्रमण से ग्रस्त हो रहे थे यद्यपि भारतवर्ष पर विदेशी जातियों के हमलों का अति प्राचीन इतिहास रहा है लेकिन यह हमला कुछ अलग था जिसके बीज गुरु नानक के जन्म से भी 9 शताब्दी पहले पड़ चुके थे।

इस्लाम धर्म के संस्थापक हजरत मोहम्मद के देहावसान के बाद ज्यादातर अरब का क्षेत्रफल मतांत्रित हो चुका था इसके उपरांत मध्य पूर्व एशिया में भी कई समुदाय इस्लाम में चले गए हजरत मोहम्मद की मृत्यु के पश्चात उनके उनके साथी रहे चार खलीफाओं ने अपने–अपने ढंग से व्याख्यायित किया और उसे धर्म के जबरन प्रसार का रूप दे दिया जिसका प्रभाव सबसे पहले बौद्ध धर्म पर पड़ा। इसने इरान एवं अफगानिस्तान के साथ सिंध तक को भी अपने कब्जे में ले लिया।

अरबों के हमलों की सूची अत्यंत लंबी है जिसके अंतर्गत उन्होंने मध्य एशिया की लगभग सभी जातियों को इस्लाम में मत मतांत्रित कर लिया था जबरन धर्म परिवर्तन के इस दौर में तुर्की जातियां भी परिवर्तित हुईं जो कालांतर में इस्लाम के प्रचार में अरबों से अधिक हमलावर एवं क्रूर साबित हुईं। हिंदुस्तान पर मुस्लिम हमले नहीं मतांत्रित तुर्कों ने किए इसमें अकेले महमूद गजनवी ने भारत पर 17 बार आक्रमण किया एवं कत्लेआम कर धनसंपदा को लूटा। इन हमलावरों का हिंदू राजाओं ने यथाशक्ति प्रतिकार किया लेकिन असंगठित होने के कारण इन्हें रोक न सके। प्रारंभ में लूटपाट की तरह प्रतीत होने वाले इन हमलों की वास्तविकता धर्म प्रचार के रूप में शीघ्र ही

सबके समक्ष आ गई जब इन्होंने जबरन धर्म परिवर्तन करवाने शुरू किए।

इतिहास गवाह है कि मोहम्मद गौरी, कुतुबुद्दीन ऐबक आदि के साथ–साथ नव मंतातरित मंगोलों ने भी भारत को अपना निशाना बनाया दिल्ली में गुलाम वंश के स्थान 1290 1320 तक स्थापित रहा जो भी एक मध्य एशिया के कबीलों से ही संबंधित था। कालांतर में तैमूर लंग ने भी लाखों हिंदुस्तानियों का कत्लेआम किया एवं जबरन धर्म परिवर्तन करवाया जिन्हें इस्लाम के रास्ते में बाधा मानता था। तुगलक वंश को तैमूर वंश ने भारी नुकसान पहुंचाया जिसका अंत इब्राहिम लोधी ने (1451–1526) किया जो अफगानिस्तान के पश्तून कबीलों से संबंधित था। लगभग 15वी शताब्दी में दिल्ली सल्तनत व्यवहारिक रूप से समाप्ति की ओर अग्रसर थी पानीपत में 1526 को हुए अब्राहम लोधी और बाबर के मध्य घमासान युद्ध हुआ जिसमें बाबर बिजयी हुआ। यहां पर एक विदेशी शासक का अंत और दूसरे विदेशी शासन का प्रारंभ होता है। यह नया वंश था जो आया तो लुटेरों की तरह था पर यहीं शासन करने लगा। बेशक इसने सत्ता प्राप्ति हेतु मुसलमानों का ही कत्लेआम किया था लेकिन शासन स्थापित करने के बाद यह भी इस्लाम के प्रचार–प्रसार की मूल भावना को ही लेकर आगे बढ़े।

इस समय तक भारत की संस्कृति एक संक्रमण काल में जीने को अभिशप्त हो गई धर्म में भी आडंबरम का बोलबाला था इसमें गुरु नानक देव जी के कालखंड तक भारत की राजनीतिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थितियां विदेशियों के हाथों में संचालित हो रही थी अपने धर्म का प्रचार प्रसार कई मोर्चों पर कर रहे थे कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने इस विशाल सुनामी को अपनी पुस्तक 'लोक चेतना और अध्यात्मिक साधना के वाहक श्री गुरु नानक देव जी' मैं इस प्रकार किया है :

1. बलपूर्वक धर्मांतरण
2. सैयद, मौलवियों, सूफियों द्वारा काव्य एवं कलाओं के माध्यम से।
3. आर्थिक बोझ जैसे जजिया कर आदि के बोझ से दबाव एवं मतांतरण।

इस बलपूर्वक मंतांतरण में हिंदू मंदिरों का अस्तित्व समाप्त किया गया उनके धार्मिक स्थलों मूर्तियों, प्रतीकों को मिटा दिया गया ताकि उनमें अपने इष्ट देवता के प्रति असुरक्षा का भाव पैदा हो जाए यह घटना बड़े पैमाने पर हर कहीं करवाई गई। हिमाचल प्रदेश की प्राचीन गद्दी संस्कृति में भी एक कहावत प्रचलित है : ''नाग नीता चौरे, जातर किसेरे धोरे'' अर्थात नाग देवता को ही चोर चुरा कर ले गए हैं तो हम धार्मिकयात्रा किस के भरोसे करें।

दूसरे सैयद दो सूफियों, मौलवियों और कलंदरों ने गायन कहानियों कथा आदि के माध्यम से सॉफ्ट इस्लाम को आगे कर दिया और भोले लोगों को समझना आने वाले कुछ जबरन कलमें पढ़वा कर मतांतरित कर लिया गया। इसी प्रकार गैर इस्लामिक आम किसानों पर भारी टैक्स लगवाना भी इसी प्रक्रिया का एक हिस्सा था।

दूसरी और इन हमलों से हिंदू धर्म में घोर निराशा एवं कुंठा का दौर शुरू हुआ और अपने ही तथाकथित नीची कहीं जाने वाली जातियों को शोषण से त्रस्त करना शुरू कर दिया और धर्म में ईश्वर के नाम पर आडंबर व्यापक हो गये थे ।बौद्ध धर्म भी कई रूपों में विभाजित होकर सिद्ध एवं नाथ संप्रदाय में बंट चुका था जो स्वयं तांत्रिक विद्या और चमत्कारों तक सीमित रह गया था।

संक्रमण के इस काल में हिंदू धर्म में नव मंतातरित होकर मुस्लिम बने अपने ही लोगों के बीच टकराव और वैमनस्य चरम पर था ।कुछ समय पहले हिंदू रहे यह लोग अपने को अरब मानने लगे थे ऐसे में समाज एक अंधकार, अनिश्चितता और कुंठा में जी रहा था। धर्म केवल मात्र दिखावे और चमत्कार तक सीमित रह गया था।

जिस मानव की सुरक्षा एवं सामाजिक बंधन को मजबूत करने के लिए धर्म की स्थापना हुई वही मानव इस धार्मिक कट्टरता के कारण विनाश के कगार पर था।

ऐसे समय में गुरु नानक देव जी का प्रकाश होता है जिन्होंने इस अंधकार को अपने मन, वचन, भक्ति एवं कर्मों से दूर किया।

नानक का गुरु होना किसी पारिवारिक या धार्मिक विरासत के कारण नहीं हुआ और न ही उन्होंने किसी से ऐसा करने की शिक्षा मिली। वे तो स्वयं में संपूर्ण थे और सबकुछ की सत्यता को पहचानते थे। नहीं तो उदरंभरि, परजीवी, अराजकता और मारकाट के उस युग में कैसे संभव है कि कोई दूसरे की पीड़ा, भूख मानवता के बारे में चिंतन करे। कोई कैसे अराजकता के उस दौर में आतताइयों से सीधा प्रश्न करने की हिम्मत रखता था वह भी उनके उद्गम स्थल पर जाकर। नानक हो जाने के पीछे कोई क्षणिक प्रतिक्रिया या भावावेश नहीं था अपितु एक दिव्य आचरण था। जिस गुण के साथ नानक देव का जन्म हुआ था वह बचपन से ही उनके व्यवहार परिलक्षित होने लगा था। उनका प्रत्येक क्रियाकलाप मानवता को संदेश से ओतप्रोत और कर्म ईश्वरीय

चेतना द्वारा संचालित हो रहा था।

- एक साधारण बालक के मन में पिता द्वारा व्यापार करने के लिए दी गई सारी पूंजी से भूखे साधुओं को भोजन करवाने का ख्याल उन्हें कहां से आया?
- उनके हृदय में ब्रह्मांड जितनी विशालता किसने भरी ?
- बचपन में वर्णमाला सीखते समय प्रत्येक वर्ण में ईश्वरीय सौंदर्य के गुणगान की काव्य प्रतिभा उन्हें किसने सिखायी ?
- नौकरी के दौरान मोदी खाने में अनाज तौलते समय 13 के अंक को 13 13 (तेरा –तेरा) अर्थात सब कुछ को प्रभु का कहने का भाव कहां से आया?
- मानव को सत्य का दर्शन करवाने हेतु परिवार एवं समाज के विरोध के बावजूद कौन सी भक्ति चारों दिशाओं की ओर ले चली?
- धर्म के नाम पर अत्याचार करने वालों को सीधे सीधे चुनौती की शक्ति कहां से प्राप्त हुई ?
- अपने अगाध ज्ञान को काव्य रूप में प्रस्तुत कर वाणी रूप बनाना इसके साथ भारत के चारों दिशाओं में बिकट

भौगोलिक परिस्थितियों में भी लगभग 28000 किलोमीटर की यात्रा करने की शक्ति एवं भिन्न भाषा भाषी लोगों को गुरु का, ईश्वर का संदेश उनकी आत्मा तक पहुंचाने के पीछे कौन सी भाषा, कौन सी शक्ति कार्य कर रही थी? ऐसे असंख्य उदाहरण हैं जिनसे गुरु नानक जी ने सामाजिक सामाजिक समरसता का संदेश दिव्य शक्ति के साथ दिया। उन्होंने संत होते हुए भी गृहस्थ जीवन को चुना तथा जीवन का मूल मंत्र दिया :–

- किरत करो (कर्म करो)
- बंड छको (बांट कर खाओ)
- नाम जपो (नाम स्मरण करो)

इसके माध्यम से उन्होंने कर्म करने ,बांट कर खाने, एवं प्रभु भक्ति का महान संदेश दिया जिसने मानव हृदय का विस्तार हुआ।

उन्होंने सामाजिक रूढ़ियों पर अपने तर्कों द्वारा प्रहार किया ऊंच–नीच तथा शोषण के खिलाफ लोगों के मन में मानवता की भावना पैदा की और ईश्वरीय सत्ता से साक्षात्कार का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने जगत की बुराइयों और आण्डंबरों की कालिमा के बीच उज्जवल बने रहने की शिक्षा दी। ''अंजन् माहै निरंजन'' रहने का मार्ग समझाया।

गुरु नानक एक गृहस्थ होकर भी सन्यासी थे और सन्यासी के साथ गृहस्थ एवं कर्मशील किसान थे जब उनकी प्रसिद्धि पूरे देश विदेश में हो गई थी और समस्त चिंतकों ने ,भक्तों ने ,धार्मिक गुरुओं ने उनकी अलौकिक ता को पहचाना था उस वक्त प्रसिद्धि के दौर में उन्होंने अपना उदासियों का बाणा त्याग कर किसानी करना प्रारंभ कर दिया ।यह जीवन का एक बहुत बड़ा संदेश था ऐसे दौर में जब वह पूरे विश्व प्रसिद्ध थे उस वक्त उन्होंने उस प्रसिद्धि को लेकर अपने लिए मंच नहीं सजाया बल्कि हल चलाकर खेतों में कार्य करना शुरू कर दिया। कर्म के सिद्धांत और उसके साथ साथ मानवता के भाव का संदेश दिया।

गुरु नानक जी की पवित्र वाणी कर्म एवं परोपकारी हेतु त्याग की परंपरा दस गुरु परंपरा में भी निभाए गए उनकी आध्यात्मिक ज्योति गुरु अंगद देव, गुरु अमर दास, गुरु रामदास, गुरु अर्जुन देव, गुरु हरगोबिंद गुरु हर राय, गुरु हरकिशन, गुरु तेग बहादुर, गुरु गोविंद सिंह तथा आदि गुरु ग्रंथ के रूप में सदा प्रकाशमान रहे रहेगी गुरुओं का संपूर्ण जीवन, संपूर्ण वाणी, संपूर्ण त्याग व बलिदान मानवता की रक्षा के लिए है।

प्रत्येक गुरु, गुरु नानक देव जी की ज्योति से प्रकाश मान हैं। उन्होंने मानवता के धर्म के खातिर बुराइयों का मुकाबला किया और अपना सर्वंश तक कुर्बान कर दिया।

गुरु नानक का अंतरिक स्वरूप कभी समाप्त नहीं हो सकता। यह सिख धर्म एवं सच्चे सुख में ज्योति रूप में युग युगांतर तक विद्यमान रहेगा। सेवा भाव से लंगर लगाता हुआ, दसवंध अर्पित करता हुआ, पर पीड़ा से स्वयं दुखी होकर सहायतार्थ बढ़ता हुआ गुरु घर को अपने वस्त्रों के साथ साफ करता हुआ, नाम जपता हुआ, हर सिख, हर मानव का हृदय नानक में हो जाता है। तब वह असीम अनंत करुणा का सागर रूप हो जाता है। इसके साथ ही वह सिख रण में अकेला होकर भी जब कईयों पर भारी पड़ता है तब गोविंद रूप हो जाता है, व्यक्तिगत इकाई नहीं रहता। यही नानक है यही गोविंद है, यही सिख है।

गुरुओं का यह संदेश गुरबाणी में रागों के रूप में संकलित होकर आत्मा की आवाज बन गया है। यह भारतवर्ष ही नहीं विश्व के प्रत्येक धर्म, संप्रदाय, संस्कृति से बिरल अलग है जो मनुष्य अंतरीप को सीधी छूती है। यह दिव्य वाणी सुही, रामकली, मारू मल्हार, सीरीज गौड़ी, आसा धनाश्री, गुजरी–सोरठ, बिहागड़ा–बडहंस, तिलंग–भैरव, बसंत–बिलावल, सांझ–प्रभाती, सारंग तुखारी जैसे रागात्मक बंदों से

सगी पगी है। इन रागरसों के साथ कहीं कहीं विभास वैरागिणी, गौरी, पूर्वी दीपक– हिंडोल एवं काफी सात और राग रस जुड़े हैं।' गुरु ग्रंथ साहिब 'में इन सभी महतराग रागनियों का समावेश चाहे वह अधिक हो या पूर्णरूपेण एक विलक्षण व चिरस्थाई संपादन हुआ है जो विश्व के और ओर छोर कहीं है ही नहीं। नानक जी की वाणी में संगीत महारस का मणिकांचन योग इन्ही रागों में रहा ,जिसे उस अजीम हंसती ने स्थान स्थान जाकर परम प्रिय साथी संगी, भाई मरदाना के योग से जनमानस को देवी महारक्षक छकाया। जिसमें नानक ज्योति परम ज्योति के ध्यान में तन्मनस्क होती होगी, उस समय वह अपने प्रिय शिष्य भाई मरदाना की रबाब थाप पर चहूं और पीयूष वर्षा कर डालते होंगे। आज उन शब्दों वाखों को जिस समय रागी भाई बहन अमर रागों में लयबद्ध करते हैं तो समय ठहर जाता है। चंचल मन में अति आनंद के अतीवानंद संचारित से जान पड़ते हैं। गुरु नानक से पहले भारत भूमि का प्राचीन संगीत भी विश्व प्रधान था किंतु उसमें सांप्रदायिक योग प्रधान रहे किंतु गुरु की रागावली अलग सश्रांत मानव को इंद्रिय सुख प्रदान करती हुई आत्मा परमात्मा का साक्षत्कार करवाती है इसमें लेश मात्र संप्रदायिक पुट नहीं लगता।''1

गुरु परंपरा के मानवता के प्रति संदेश एवं बलिदानों को याद करते हुए हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं, ''500 वर्ष बीत गए। भारतवर्ष के विशाल अकाश के नीचे न जाने कितनी घटनाएं घटीं, धरती को न जाने कितनी बार रक्त स्नान से सिक्त होना पड़ा, अन्याय और शोषण ने न जाने कितने तांडव किए, पर कार्तिकी पूर्ण पूर्णिमा का चांद अपनी स्निग्ध शोभा उसी प्रकार बिखेरता जा रहा है, गुरु की पवित्र बाणी उतनी ही स्निग्ध ज्योति विकिरण कर रही है। उतरो महागुरो, एक बार फिर उतरो। हम तुम्हारी ऊंचाई तक नहीं पहुंच रहे हैं आज भी मनुष्य की क्षुद्र अहमिका विक्षिप्त नर्तन कर रही है। आज भी भय और लोग की आशंका और तृष्णा की धमाचौकड़ी व्याप्त है। एक बार और आओ, रक्षा करो, मनुष्येतर की, धर्म की, सत्य की, बड़ी आशा और विश्वास से हम तुम्हारा स्मरण कर रहे हैं। जय हो तुम्हारी अमर वाणियों की, जय हो तुम्हारी शरणागति की जय हो तुम्हारी निर्मल पवित्र स्मृति की जय हो, जय हो।''2

संदर्भ ग्रंथ :–

1. बेनी कृष्ण शर्मा विश्व धरोहर सिख गुरु परंपरा, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत नई दिल्ली। पृ 10,11
2. डॉ कुलदीप चंद अग्निहोत्री, लोक चेतना और अध्यात्मिक साधना के वाहक श्री गुरु नानक देव जी, प्रभात पेपरबैक्स नई दिल्ली। पृ.185,86
3. खुशवंत सिंह,सिखों का इतिहास भाग 1 किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली
4. खुशवंत सिंह, सिखों का इतिहास भाग 2, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. बख्शीश सिंह, सिक्खों का इतिहास, भाग 1, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन नई दिल्ली
6. हुकम चंद राजपाल, पंजाब की हिंदी समकालीन कविता।
7. मोहन लाल सहगल, गुरु ग्रंथ साहिब का सांस्कृतिक अध्ययन, पटियाला भाषा विभाग।
8. गुरदास जी, अमृतसर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी 2001
9. साहिब सिंह, जपुजी साहिब की टीका, अमृतसर सिंह ब्रदर्स 1998
10. हजारी प्रसाद द्विवेदी, सिख गुरुओं का पुण्य स्मरण, दिल्ली राजकमल प्रकाशन 2007
11. हजारी प्रसाद द्विवेदी, गुरु नानक व्यक्तित्व और संदेश, दिल्ली प्रकाशन विभाग भारत सरकार
12. ओशो रजनीश, एक ओंकार सतनाम।
13. दूरदर्शन पर प्रसारित श्री राजेंद्र प्रसाद स्मृति व्याख्यानमाला में' गुरु नानक, व्यक्तित्व, चिंतन और उद्देश्य, विषय पर हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का व्याख्यान।